कामायनी में सामाजिक और मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति

Kamayani Me Samajik Aur Manaviya Mulyon ki Abhivyakti

*Dr.Babitha.B.M. Associate Professor and HOD of Hindi, SSMRV College, Bangalore.

पीठिका:

कामायनी की कथा मूलत: एक कल्पना, एक फैण्टसी है। जिसमें प्रसाद जी ने अपने समय के सामाजिक परिवेश, जीवन मूल्यों, सामयिकता का विश्लेषित सम्मिश्रण कर इसे एक अमर ग्रन्थ बना दिया। यही कारण है कि इसके पात्र -मनु, श्रद्धा और इड़ा - मानव, प्रेम व बुद्धि के प्रतीक हैं। इन प्रतीकों के माध्यम से कामायनी अमर हो गई। क्योंकि इन प्रतीकों के माध्यम से जीवन का जो विश्लेषण कामायनी में प्रसाद जी ने प्रस्तुत किया, वह आज भी उतना ही सामयिक है, जितना कि प्रसाद जी के समय में रहा होगा। देवों का घमण्ड, स्वयं सृष्टिकर्ता के रूप में स्वयं सृष्टि ने ही उनके उच्छ़ंखल व्यवहार को लेकर तीनों लोकों में प्रलय कर कैसे तोड़ा यह जहां पौराणिक ऐतिहासिक बात है वहीं एक सबक है मनुष्यत्व के प्रति...धरती के प्रति उनके मनमाने व्यवहार के प्रति।

कामायनी का दर्शन तत्कालिन सामाजिक जीवन दृष्टिकोण का ही वाचक है। प्रसाद अपने समय की सामाजिक समस्याओं के प्रति सजग और जन जीवन के प्रति संवे<mark>दनशील</mark> है। प्रसाद जी अन्य भारतीय दार्शनिकों की तरह इस जीवन जगत के मिथ्यात्व में आस्था नहीं रखते। वे रहस्<mark>यवादी हैं लेंकिन उनका रहस्यावाद भी ज्ञात सत्य से परे किसी अरूप सत्ता</mark> की ओर इशारा नहीं करता। प्रसाद जी तो स्थूल <mark>और सूक्ष्म, ज</mark>ड़ और चेतन को एक ही तत्व की अवस्था के रूप में देखते हैं। न तो सूक्ष्म स्थूल से अलग हैं और न चेतन जड़ से। <mark>कामा</mark>यनी के प्रारंभ से ही उन्होंने जड़ और चेतन के नकली भेद का विरोध किया है-

'नीचे जल था उपर हिम था, एक तरल था एक सधन,

एक तत्व की ही प्रधानता- कहो उसे जड या चेतन।

जड़ का अर्थ है पदार्थ। पदार्थ को देखकर ही आकांक्षा, कल्पना या चेतना जागती है। इसलिए इस पदार्थ से हटकर चेतना की कल्पना करने पर वह शून्य नहीं होगी। प्रसाद ने चेतना को किसी शून्य में ढूँढने के बजाए इसी जीवन जगत में ढूँढा है। प्रसाद जी अद्वैतवादी हैं लेकिन उनका अद्वैतवाद वेदान्त का अद्वैत नहीं है, क्योंकि वे इस जगत को प्रतिभाषिक सत्ता कहकर उसे त्यागने की सलाह नहीं देते। वे तो अपने अद्वैत को इसी संसार में देखते हैं-

अपना दुःख सुख से पुलिकत, यह भूत विश्व स चरा चर

चिति की विराट वपु मंगल यह सत्य सत्त चिर सुन्दर।

प्रसाद जी की राय में यह जड़ विश्व ही चर अचर है। यह सुख और दुःख के द्वन्द्वात्मक संबंध से बंधा हुआ है। प्रसाद जी इस जड़ विश्व को ही सत्य, शिव और सुन्दर बनाने का संकल्प लेकर चलते हैं। उनके इस अद्वैतवाद का ही सामाजिक रूप है मानवतावाद। प्रसाद जी ने कामायनी में इस मानवतावाद के प्रतिनिधि पात्र के रूप में श्रद्धा को खड़ा किया है। श्रद्धा रागात्मिक वृत्ति का प्रतीक है। वह आस्था और विश्वास का ही मूर्तिमान रूप है। वह काम गोत्रजा है। अस्तित्व में सहज आस्था का ही नाम श्रद्धा है। विश्व कल्याण में वह अपने जीवन की सार्थकता ढूंढ़ती है। उसका संदेश है 'विजयनी मानवता हो जाए'। उसके परिचय में कामायनीकार ने कहा है कामायनी, विश्व की मंगल कामना अकेली। यह मनु को मानवता का प्रशस्थ पथ दिखाती है। मनु में भटकाव है विचलन है। यह विचलन परस्पर विरोधी प्रवृत्तियों के कारण है। मनु कभी तो आत्मावादी हो जाते हैं तो कभी विवेकवादी। कभी उनका आत्मवाद अतिशय हार्दिकता के कारण उश्रृंखल भोगवाद का रूप ले लेता है और कभी उनका विवेकवाद अतिशय बौद्धिकता के कारण दुःखवाद या तप वैराग्य का रास्ता पकड़ लेता है। प्रसाद जी ने अतिशय दुःखवाद तथा अतिशय भोगवाद दोनों का विरोध किया है। इसलिए तो उन्होंने कामायनी में दुःखवाद और विवेकवाद में समन्वय स्थापित किया है। न अतिशय भौतिकता काम्य हो सकती है और न ही वैराग्य काम्य हो सकती है। कामायनी में जब भी मनु में तप या वैराग्य का भाव जागता है तो श्रद्धा उन्हें रास्ते पर लाती है। मनु में कभी तो तप या वैराग्य की प्रवृत्ति मिलती है तो कभी भोग की। प्रसाद जी ने बताया कि वैराग्य और भोग की प्रवृत्तियों का उद्गम एक ही है और वह है जीवन की क्षणभंगुरता का बोध। प्रसाद जी शिव से प्रभावित रहे हैं। शिव जोगी भी है और भोगी भी। मनु के भीतर योगी और भोगी का समाहार दिखाकर प्रसाद ने यह बताने की कोशिश की है कि यह द्वन्द्व न केवल शिव का है, न मनु का यह सनातन मानवता का द्वन्द्व है। इस द्वन्द्व से छुटकारा दोनों प्रवृत्तियों के समन्वय से ही संभव है। श्रद्धा दुःखवाद का विरोध करते हुए कहती है:

दुःख के डर से तुम, अज्ञात जटिलताओं का कर अ<mark>नुनय,</mark>

काम से झिझक रहे हो आज भविष्यत से बनकर अनजान।

इच्छा हीं पाप का मूल है। यही इस संसार से जोड़<mark>ती है</mark>। जीवन जगत से परानमुख होने के लिए उन्होंने इच्छा से दूर जाना जरूरी समझा। प्रसाद जी चूकि सभी जीवन जगत की सत्यता में विश्वास करते हैं इसलिए उन्होंने इच्छा के अनदार की नहीं समाहार की बात की। श्रद्धा मनु से इच्छा को अपनाकर सृजन के लिए प्रेरित करती है:

काम मंगल से मंडित श्रेय सर्ग इच्छा का है परिनाम

तिरस्कृत कर इसको तुम भूल बनाते हो असफल भवधाम।

विज्ञानवाद

इच्छा ही विकास और प्रगित के मूल में है। श्रद्धा इसी इच्छा से कर्म और भोग की चक्रीय प्रक्रिया को गितशील करती है। उनका दर्शन इसी संसार को कर्म के जिरए आनन्दमय बनाने का है। यदि कामायनी जीवन की मंगल कामना है तो इस जीवन को कर्ममय बनाकर ही मंगलमय बनाया जा सकता है। जीवन तो कर्म और भोग के चक्र में उलझा है फिर इसमें वैराग्य और तप के लिए अवकाश कहाँ है। श्रद्धा मनु से कहती है:

एक तुम यह विस्तृत भू खंड अखिल वैभव से भड़ा अभंग

कर्म का भोग, भोग का कर्म यही जड़ का चेतन आनंद।

कर्म और भोग की यह चक्रीय प्रक्रिया इस जीवन को ही अर्थवान बनाने के लिए है। मनु यदि कैलाश पर जाते हैं तो यह पलायन नहीं है व्यक्तिगत सक्रियता से अवकाश लेकर सामुहिक जीवन की ओर अभिमुखता है।

सारस्वत प्रदेश में मनु इड़ा के विज्ञानवाद और कर्म संगठन की सहायता से एक औद्योगिक सभ्यता निर्मित करते हैं। कल-कारखानों, बड़े-बड़े क्षेत्रों से जो पूंजीवाद विकसित हुआ उसमें श्रम का संतुलन नहीं था। श्रम के ही असंतुलित बटवारे की वजह से वर्गों की सृष्टि हुयी। जिनके हाथ में पूंजी आयी। उनके साथ शक्ति भी जुड़ी और वे उसी पूंजी और शक्ति के बल पर दूसरों के जीवन को दुर्भर बनाने के लिए नियम भी बनाने लगेः

श्रम भाग वर्ग बन गया जिन्हें

अपने बल का है गर्व उन्हें

नियमों की करनी सृष्टि जिन्हें

समरसतावाद

इस असंतुलन के कारण ही एक वर्ग शोषक हो ग<mark>या और दूसरा</mark> शोषित। मनु जनता के सेवक थें वे उसके शासक बन गए। जब उन्होंने इड़ा पर भी अधिकार करना चाहा, जनता हिंसक संघर्ष पर उतर आती है।

इड़ा संगठित होकर मनु को ललकारती है- 'आ यायावर? अब तेरा विस्तार कहाँ है। प्रसाद ने दिखाया है कि पूंजीवाद से ही जनतंत्र और जनतंत्र से ही अधिनायकवाद पनपता है। मनु श्रद्धा के साथ कैलाश की ओर प्रस्थान करते हैं। कैलाश पर तीन जाज्वल्यमान बिन्दु हैं। श्रद्धा के मुसकुराते ही उनमें एक विद्युत की रेखा सी दोड़ जाती है और तीनों बिन्दु मिलकर एक हो जाता है। त्रिपुर प्रदेश के ये तीनों बिन्दु इच्छा, ज्ञान और क्रिया है। इनमें एकता का अभाव ही जीवन की बिडम्बना है। ये तीनों जैसे ही एकीकृत होते हैं जीवन की विडम्बना भी खत्म हो जाती है। मनु श्रद्धा की सहायता से कैलाश पर समरसतावाद की स्थापना करते हैं। इड़ा जब मानव एवं अन्यों के साथ मनु से मिलने कैलाश पर आती है वह कहती है: हम एक कुटुम्ब बनाकर यात्रा करने हैं आये। मनु जबाब देता है-

शापित न यहाँ कोई तापित पापी न यहाँ है,

जीवन वसुधा समतल है समरस है जो कि जहाँ है।

यह है मनु का समरसतावाद। मनु कहते हैं- 'देखो कि यहाँ पर कोई भी नहीं पराया'। मनु का समरसतावाद समन्वयवाद है। यह मानवता की उच्च भूमि है। अन्ततः कह सकते हैं कि कामायनी अद्वैतवाद से शुरू होती है और अद्वैतवाद में खत्म होती है। इसका अद्वैत यदि सामाजिक स्तर पर मानवतावाद है तो सांस्कृतिक स्तर पर समरसतावाद है।

उपसंहार

'कामायनी' जयशंकर प्रसाद कृत ऐसा महाकाव्य है जो सदैव मानव जीवन के लिए एक प्रेरणा बन कर रहेगा। अपनी लोकप्रियता, आलोचना तथा प्रशंसा को समभाव से स्वीकार कर 'कामायनी' आज भी अपने स्थान पर अटल है। इसकी प्रासंगिकता सुधि पाठकों तथा आलोचकों के लिए आज भी उतनी ही है जितनी हमेशा रही है। संक्षेप में, कामायनी एक ऐसा महाकाव्य है, जो आज के मानव जीवन को उसके समस्त परिवेश व परिस्थिति के साथ प्रस्तुत करता है।

सन्दर्भ:

- कामायनी, जयशंकर प्रसाद, राजपाल एंड सन्स पब्लिशिंग, नयी दिल्ली, २०१७
- गजानन माधव मुक्तिबोध: कामायनी: एक पुनर्विचार, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, १२ संस्करण
- आलोक श्रीवास्तव: स्वप्नलोक में आज जागरण: महाकवि जयशंकर प्रसाद की काव्य यात्रा-१, संवाद प्रकाशन, मेरठ, २०२२
- आलोक श्रीवास्तव: नील लोवहत ज्वाल जीवन की: महाकवि जयशंकर प्रसाद की काव्य यात्रा-२, संवाद, प्रकाशन, मेरठ, २०२२